सामाजिक समस्या

एक नवीन विषय के रूप में समाजशास्त्र के उद्गम व विकास एवं परिवर्तन की पृष्ठभूमि में सामाजिक समस्या की विचार की अवधारणा ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है समाजशास्त्र का विकास समस्यामूलक परिवेश एवं परिस्थितियों का अध्ययन करने एवं इनका निराकरण करने के प्रयासों के रूप में हुआ है।

सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में सामाजिक विचारकों का ध्यान सहज रूप से इसलिए आकर्षित हुआ है क्योंकि ये सामाजिक समस्याएं जीवन का अविभाज्य अंग है मानव समाज न तो कभी सामाजिक समस्याओं से पूर्ण मुक्त रहा है और न ही रहने की संभावना निकट भविष्य में नजर आती है परन्तु इतना तो निश्चित है कि आधुनिक समय में विद्यमान संचार की क्रांति तथा शिक्षा के प्रति लोगों की जागरूकता के फलस्वरूप मनुष्य इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील एवं सजग हो गया है सामाजिक समस्याओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने में जन संचार के माध्यम जैसे टेलीविजन अखबार एवं रेडियो ने अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

मुख्यतः टेली विज़न पर प्रसारित विभिन्न योजना के कार्यक्रमों तथा स्थानीय, प्रादेशिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय अखबारों की भूमिका प्रशंसनीय है।

मानव समाज में संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएँ पाई जाती है परन्तु भिन्न-भिन्न समाजों में उनका स्वरूप प्रकृति एवं गहनता अलग-अलग होती है।

सामाजिक समस्याओं का संबंध समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत विद्यमान एवं परिवर्तन विषय से संबंध रहा है।

जो समाज जितना अधिक गतिशील एवं परिवर्तनशील होगा उसमे उतनी ही अधिक समस्याएँ विद्यमान होगी।

समाज का ताना-बाना (समस्या) इतना जटिल है कि इसकी एक इकाई में होने वाला परिवर्तन अन्य इकाईयों को भी प्रभावित करता है।

इस परिवर्तन का स्वरूप क्या होगा? एवं इसके प्रभाव क्या होंगे यह समाज की प्रगति पर निर्भर करता है।

विभिन्न युगो में सामाजिक परिवर्तन की गति अलग-अलग रही है। इसलिए भिन्न-भिन्न समाजों में सामाजिक समस्याओं की प्रकृति एवं स्वरूप भी अलग-अलग पाये जाते है।

वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन अति तीव्र गति से हो रहा है इस तरह बदलते आधुनिक समाज के स्वरूप ने सामाजिक समस्याओं में बहुतायत से वृद्धि हुई है।

मानव समाज मन सामाजिक समस्याओं का उन्मूलन करने के लिए सदैव प्रयासरत रहा है क्योंकि सामाजिक समस्याएं सामाजिक व्यवस्था में विघटन पैदा करती है जिससे समाज के अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाता है।

समाज शास्त्रियों एवं सामाजिक विचारकों ने अपनी रुचि के अनुसार समाज के स्वरूपों संरचनाओं, संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन किया है।

वर्तमान समय में भारतीय समाज अनेक सामाजिक समस्याओं से पीड़ित है जिनके निराकरण के लिए राज्य एवं समाज द्वारा मिलकर प्रयास किये जा रहे हैं।

भारत की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित है

- गरीबी और बेरोजगारी
- जनसंख्या वृद्धि
- अशिक्षा
- दहेज प्रथा
- नशाखोरी
- भ्रष्टाचार
- क्षेत्रवाद एवं भाषावाद

Scanned with CamScanner

नारी शोषण
साम्प्रदायिकता एवं जातीयता
आतंकवाद

* गरीबी और बेरोजगारी की समस्या

भारत की प्रमुख समस्या है गरीबी और बेरोजगारी जिसका मूल कारण है बढ़ती हुई जनसंख्या स्वतंत्रता से पूर्व जहां भारत की जनसंख्या मात्र 36 करोड़ थी वहीं वर्ष 2011 में जनसंख्या 125 करोड़ को पार कर गई। इसका तात्पर्य यह है कि जनसंख्या का दुष्परिणाम यह है कि भारत में गरीबी और बेरोजगारी में बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है।

आज भी भारत में 40% लोग गरीबी रेखा के नीचे अपना गुजर बसर करने को बाध्य है। जनसंख्या विस्फोट ने जहाँ हमें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं भोजन, आवास, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, विद्युत आदि से वंचित किया है वहीं बेरोजगारी बढ़ाने में योगदान किया है। जितनी नौकरियां हैं उसके अनुपात में काम मांगने वालों की संख्या हजार गुना है।

गरीबी - अमीर के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। बेरोजगार

युवक शहरों की ओर दौड़ रहे हैं जिससे नगरों में जनसंख्या का बोझ बढ़ रहा है, आवास की समस्या उत्पन्न हो रही है अपराध बढ़ रहे हैं। इतनी बड़ी जनसंख्या को शिक्षा देना भी कोई आसान काम नहीं है।

* जनसंख्या वृद्धि की समस्या

बढ़ती हुई जनसंख्या को कम करने के लिए अनिवार्य परिवार नियोजन की स्कीम लागू की जानी चाहिए और चीन की तरह प्रत्येक दम्पति को केवल एक बच्चा उत्पन्न करने की छूट होनी चाहिए, विवाह की आयु में वृद्धि करके भी इस समस्या पर अंकुश लगाने में मदद मिल सकती है।

अशिक्षा भी जनसंख्या वृद्धि का कारण है अतः लोगों को परिवार नियोजन की जानकारी देकर, जन चेतना के द्वारा जनजागरण करके इस समस्या पर किसी हद तक काबू पाया जा सकता है यह कहना ठीक नहीं होगा कि इनके कोई लाभ नहीं हुआ लोगों का जीवन स्तर पहले से सुधरा है और मध्यम वर्ग के लोगों को व्यय करने का

क्षमता में वृद्धि हुई तथा भारत एक बहुत बड़ा उभरता बाजार विश्व में माना जाने लगा है।

भारत सरकार ने जवाहर रोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार योजना आदि के द्वारा भी बेरोजगारी पर अंकुश लगाने का प्रयास किया है।

* अशिक्षा की समस्या

अशिक्षा भारत की दूसरी बड़ी समस्या है वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 65.38 % लोग ही शिक्षित हैं।

अशिक्षा के अभिशाप से ग्रस्त लोगों को शोषण के चक्र में पिसना पड़ता है उन्हें विकास के बाहर अवसर उपलब्ध नहीं होते और वे अपने बच्चों को देश का भावी सुशिक्षित नागरिक बना पाने में प्रायः सफल नहीं हो पाते।

सरकार यद्यपि शिक्षा के लिए पर्याप्त धन व्यय कर रही है परन्तु सरकारी योजनाएँ इस दिशा में अधिक सफल नहीं रही हैं प्राथमिक शिक्षा, और स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर निरक्षरता को साक्षर किया जा रहा है।

* नशाखोरी की समस्या

आधुनिकता की चपेट में आकर मादक द्रव्यों का सेवन करने की ओर नई पीढ़ी अग्रसर हो रही है महानगरों में चरस (गांजा), अफीम, स्मैक के नशे के आदि नवयुवक एवं नवयुवतियाँ अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं जब तक इन्हें परिवार से स्नेह नहीं मिलेगा तब तक नशे की लत से इनका छुटकारा संभव नहीं है। तथा व्यक्ति नशे के अभाव में उसका मानसिक, शारीरिक संतुलन भी डगमगा जाता है।

भारतीय समाज में धनी निर्धन, बाल-वृद्ध स्त्री-पुरुष, हरिजन, मजदूर, शिक्षित-अशिक्षित सभी वर्गों में नशाखोरी की प्रवृति पाया जाती है।

* दहेज प्रथा की समस्या

दहेज प्रथा के नाम पर आज नारियों को जलने के लिए विवश होना पड़ रहा है। तमाम प्रयासों के बावजूद समाज में लड़कियों की स्थिति लड़को की तुलना में दयनीय है।

नारियों को आगे बढ़ने के लिए समाज अवसर नहीं देता है। कन्या पराया धन मानी जाती है

मृत भूत के अनुसार लड़कियों नारियों का लोग शोषण (कूड़े ढेर) को संतान समझकर उनके पालन पोषण और पढ़ाई - लिखाई पर अधिक खर्च नहीं करना चाहते।

दहेज प्रथा ने समाज में भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी जैसी बुराइयों को जन्म दिया है। आज यह बुराई छोटे स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर के नेताओं तक घर कर गई है यहां तक कि संसद पर भी रिश्वत खाने या रिश्वत को लेकर वोट देने के आरोप लगते रहे हैं।

* भ्रष्टाचार की समस्या

भ्रष्टाचार भारत के जनजीवन में मकड़ी जाल की तरह व्याप्त है कि इस बुराई को दूर करने का कोई कारगर उपाय दिखाई नहीं देता। भ्रष्टाचार की यह समस्या भारतवासियों की रग - रग में व्याप्त है।

सरकारी कर्मचारी और अधिकारी रिश्वतखोरी है व्यापारी टैक्स चोर है तथा राजनीतिज्ञ भ्रष्टाचार के ~~दलदल~~ दलदल में आकंठ डूबे हुए हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति ने

येन - केन - प्रकारेण धनार्जन को ही जीवन का मुख्य मान लिया है परिणामत: लोग सही- गलत हर तरीके से धनार्जन कर रहे हैं।

* क्षेत्रवाद एवं भाषावाद की समस्या

आज क्षेत्रवाद और भाषावाद की समस्या भी बढ़ रही है क्षेत्रीय दलों ने इस आग को और भड़काया है। कुछ निहित स्वार्थ पूरा करने के लिए नेतागण इन भावनाओं को उग्र रूप से भड़का देते हैं जिससे देश का भारी अहित हो रहा है।

क्षेत्रीय विकास में असमानता एवं केन्द्र राज्य संबंधों की असमानता ने इन भावनाओं को तीव्र करने में योगदान किया है।

* नारी शोषण की समस्या

नारी स्वतंत्रता के इस युग में भी भारत में नारी को वह सम्मान एवं दर्जा प्राप्त नहीं है जो होना चाहिए। आज भी हमारे परिवारों में लड़की को लड़के की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता है। गर्भ में यदि लड़की हो तो उस भ्रूण को पूर्ण विकसित होने से पूर्व ही नष्ट कर दिया जाता है

नारी का शारीरिक शोषण एवं प्रताड़न, आम बात है। नारियों के शोषण के हेतु ये ही बुराईयाँ नारी हत्याएं आदि निरंतर बढ़ रही है।

* साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद की समस्या —

साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद की जहर हमारी नसों में घुल गया है अतः लोकतंत्र की जड़े कमजोर हुई है भारत की एकता को ही अतः खतरा उत्पन्न हो गया है।

राजनीतिक अस्थिरता भी इन्हीं की देन है आरक्षण की समस्या को लेकर आए दिन होने वाली अशांति भी जातिवाद की देन है साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काकर लोग, दंगे करवा देते हैं और धर्म की आड़ पर राजनीति की रोटियाँ सेंकते है।

कैसी विडम्बना है कि आज भी भारत में मंदिर - मस्जिद के नाम पर हिन्दू मुस्लिम दंगे हो रहे हैं प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता की छूट संविधान ने दी है।

फिर हरेक धर्म की पूजा पद्धति पद्धति भी अलग है अतः

उनमें हस्तक्षेप का कोई प्रश्न ही नहीं उठता ? वस्तुतः ऐसा नहीं हो पा रहा है। छुआ-छूत एवं ऊँच-नीच की भावना के तहत भारत में आज भी ब्राह्मण और शूद्र का भेदभाव व्याप्त है।

* आतंकवाद की समस्या -

आतंकवाद की समस्या भी भारत की प्रमुख समस्या है। कश्मीर में हम पिछले 15 वर्षों से आतंकवाद झेल रहे हैं हजारों निर्दोष नागरिकों की हत्या कश्मीरी आतंकवादी घटनाओं में हुई है। तथा लाखों लोग पलायन करने को विवश हुए हैं सरकार को भारी आर्थिक संसाधन कश्मीर में सेना तैनात करने के लिए लोगों सामानों को झुकाना पड़ता है।

पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में आतंकवाद अपने पैर पसार रहा है यद्यपि यह आतंकवाद सीमा पार से प्रायोजित है तथापि यह हमारे लिए एक गम्भीर समस्या है जब तक हम सीमा पार आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्रों को ध्वस्त नहीं कर देते और अपनी सीमा की पूरी चौकसी नहीं करते तब तक इस समस्या से निजात पाना संभव नहीं है

निष्कर्ष :
संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हम अनेक समस्याओं से घिरे हुए हैं यदि इन समस्याओं पर काबू पा लें तो निश्चित रूप से भारत दुनिया के किसी भी विकसित राष्ट्र के बराबरी ही नहीं कर लेगा अपितु उससे आगे निकल जाएगा।

——— x ——— x ———